Praveen Rahul **(May 2022)** Musahar caste in Bihar is a "social analysis"
International Journal of Economic Perspectives,*16*(5), 246-250
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

fcgkj esa eqlgj tkfr ,d ^^lkekftd fo'ys"k.k**

ioh.k jkgy
'kks/k Nk=]
ex/k fo'ofo|ky;] ck/kx;k

मुसहर बिहार गंगा के उत्तरी मैदान और तराई में पाये जाने वाला दलित एक समुदाय या जाति है, इन्हें मुसहरू, बनवासी, मुइयां, मांझी और रजवार के जाना जाता है। भूमि खोदने के नाम से भी स मुडयो कहा जाता है, । झारखण्ड के छोटानागपुर इलाके में इन्हें भुइयां कहा कारण इन्हें जाता है उत्तर बिहार में इसे मुसहर के नाम से जाना जाता है, जबकि मध्य बिहार मे मुइयां और मुसहर नाम से जाना जाता है।

मुसहर का शाब्दिक अर्थ चूटा रवाने वाला। चूहा पकड़ने और खाने के कारण इनका नाम मुसहर पड़ा। ब्रिटिश नृवंश विज्ञान विज्ञानशास्त्री हर्षट होप रिस्ले ने बंगाल प्रेसिडेंसी की जातियों और जनजातियों का व्यापक अध्ययन में किया था। अनुमान लगाया रिस्ले ने अपने 1881 के सर्वेक्षण था कि मुसहर छोटानागपुर पठार शाखा के शिकारी- संग्रहकर्ता मुईयां की एक को यह 1881 सवक्षण पहले यानी कि वर्तमान से पहले गंगा से लगभग न लगभग ३०० के मैदानों में चले गयेथी क 350 वर्ष पहले गंगा वर्तमान से पहले गंगा के मैदानों में चले गये थी पुराने समय में मुस्हर बंधुआ मजदूर जैसी थी, जमींदार गौर किसान जब इनसे फसल कटवाते थे, तो मजदूरी के बदले इनको अनाज देते थे, इसी से इनका गुजर बसर में चलता था, लेकिन मजदूरी में मिलने वाले अनाज से इनका पेट नहीं भर पाता था। लेकिन मजदूरी मिलने वाले उपनाज से इनका पेट नहीं भर

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
***Corresponding author**:* Praveen Rahul
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: May 2022

पाता था। सुग्नाज की कमी होने की स्थिति में ये गेहूँ और धान के बालों को इकट्ठा करना शुरू किया, जो चूहे अपनी मांद में ले जाते थे। फिर उससे अन्न निकालकर भोजन के रूप में प्रयोग करते थे। मांद से गेहूँ और धान बोल निकालने के दौरान इन्हें वहाँ चूहा मिला, साग- सब्जी के अभाव में यह चूहों को सब्जी के रूप में खाने लगे, इस तरह अनाज के अभाव में चूहे को आहार के रूप में ग्रहण करने वाले 'मुसहर' कहलाए ।

वर्तमान में कई इलाके के मुसहर अपने को शबरी का वंशज मानते हैं जो शरी रामाराण की एक महिला हिन्दु धर्मग्रन्थ रामायण पात्र थी। वह निम्न वर्ग के शवर जाति की थी, और मातंग कृषि के साथ जंग में रहती थी। हंटर के अनुसार वर्तमान में यह जाति उडीसा के जंगल में रह रही है। पश्चिमी बंगाल में मुसहर को मगहिया, मुसहर और दहगर कहा जाता है। त्रिपुरा में तिरहुतिया, रिकियासन, कहिवार, दोबार और घटवार कहा जाता है। उत्तरप्रदेश में इसे बनानुस, नराज और गौनर कहा गया है। के. एम. ने अपनी पुस्तक इन्तियाज कम्मुनिटिज मे मुसर चार गौत- सूर्या, कभी, कठया और शबरी का वर्ण किये हो ई मे तिरहुत

सन् 1935 के संतदास के नेतृत्व में घटना जिला सभा हुई थी, प्रमण्डल के ढेकुली गाँव में मुसहरों की एक जिसमे मुहरों से अपने शोषण एवं अत्याचार के खिलाफ आवाज उगया था।

22 जून 1936 ई० को बड़ी संख्या में जमीन्दार Date: / प्रसाद चौधरी के खिलाफ दल सिंह सराय होकर जुलुस में जमा होकर निकाले थे, और एक आभ के बगीचे में जमा होकर समा किये यो मुसहरों इस बान्दोलन को दबाने के लिए आन्दोलन चौधरी के क को दबाने के लिए रामाश्रय प्रसाद सहपर दूसरे दिन समस्तीपुर वो दर्जन सैन्य बल पुलिस दल सिंह सराय को उस आम सुबह को जिलाधिकारी के बगीचे में आये थे, क दो दिनों से अपनी शोषण एवं अत्याचार के खिलाफ मुसहरों की खिल्मका समा 1936 ई० की सुबह को चल को बुरी रही थी तरह जहाँ 24 जून से जख्मी

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Praveen Rahul
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: May 2022

मुसहरों को समस्तीपुर जेल भेजा गया था 31 अगस्त 1936 ई० को विधान परिषद में पुलिस जुल्म के खिलाफ और मजदूरी के माँग पर प्रश्न मी उठे थो

26 जुलाई 1936 ई०

को बड़ी संख्या में जमीन्दार रामाश्रय प्रसाद चौधरी के खिलाफ दल सिंह सराय में जमा होकर जुलुस निकाले थे, और एक आभ के बगीचे में जमा होकर सभा किये थो मुसहरों के इस आन्दोलन को दबाने के लिए रामाश्रय प्रसाद चौधरी के सहपर दूसरे दिन सुबह को जिलाधिकारी समस्तीपुर दो दर्जन सैन्य बल पुलिस दल सिंह सरायक उस आम के बगीचे मे आये थे जहाँ दो दिनों से अपनी शोषण एवं अत्याचार के खिलाफ मुसहरों की खिलाफ समा चल रही 1936 ई0 की सुबह 24 जून को बुरी तरह से जख्मी मुसहरों को समस्तीपुर जेलभेजा गया था ।31 अगस्त 1936 ई० को विधान परिषद में पुलिस जुल्म के खिलाफ और मजदूरी के माँग पर प्रश्न मी उठे थो

26 जुलाई 1937 ई० को तत्कालीन मुजफफरपुर जिले के सीतामढ़ी अनुमण्डल में वेलेसण्ड थाना अन्तगत पोटा गाँव में मुसहरों की बड़ी समा आयोजित की गई थी। वे सब जेल में कैदियों की रिहाई की माँग कर रहे थे। सबों के हाथों में झंडे थे। बीरे-धीरे वह संख्या बढ़कर मुसहरों पच्चीस हजार हो गई थी। पुलिस और मुसहरों के बीच मुठभेड़ में कई लोगों में चोटें आयी बाद में पूरी घटनाओं को निष्पत जांच की माँग की गई। इसके बाद भी उत्तर बिहार के भूमि पर सामंत एवं जमीनदारों के श्लेषण के खिलाफ | हर जोर-जुल्म के खिलाफ मुसहरों का का आन्दोलन चलता रहा। इस दलित मजदूर के आन्दोलन में महिलाएं भी सक्रिय भूमिका निर्माती रही।

दक्षिण बिहार भी मुसहर आन्दोलन से वंचित नहीं रहा। 1978-79 ई० में बोधगया में मुसहरों 1918 80 के द्वारा भूमि आन्दोलन चला था। मुसहरों का यह आन्दोलन बोधगया के शंकर मह के खिलाफ था। बोधगया का शकर मठ इस इलाके में हजारों एकड़ जमीन का जमीन्दार था। इस इलाके में के महादलित, खासकर भुईयाँ (मुसहर)

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Praveen Rahul
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: May 2022

जाति के लोग इस तरह मठ की जमीनों बंधुआ मजदूर की तरह काम करते थे। उन्हें न्यूनतम मजदूरी नहीं दी जाती थी । काम के बदले जो अनाज मिलता था. ठूनसे इनके परिवार एवं बाल पेट नहीं भरता था। बच्चों का इन खेतिहर मजदूरों की दुर्दशा और नाजूक स्थिति की ओर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का ध्यान गया और जमीन के वितरण पर आन्दोलन शुरू किये गये। यह आन्दोलन केवल भूमि अधिकार के लिए महत्वपूर्ण नहीं था। सामाजिक समानता बठिक का भी संघर्ष था।

मुसहर जाति भारत, नेपाल और बंग्लादेश में पाये जाते है। लगभग सार मुसहर ग्रामीण इलाकों में निवास करते हैं। केवल 3% शहरी इलाकों में रहते है। यह भोजपुरी, मगही, मैथिली और हिन्दी बोलते हैं। भारत में यह मुख्य रूप से उत्तरप्रदेश बिहार, झारखण्ड और मध्यप्रदेश में रहते हैं। पूर्वी उत्तरप्रदेश और पश्चिमी नेपाल में इनकी बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी दावा के लोगों बहुतायत आबादी है। करते हैं कि पूरे देश में हैं की आबादी इस समाज 80 लाख के करीब है।

संदर्भ

1. ए बी जेंगचम, सुभाष । "मुशहर" । बांग्लापीडिया: बांग्लादेश का राष्ट्रीय विश्वकोश। बांग्लादेश की एशियाटिक सोसायटी ।

2 ए बी ए हसन और जेसी दास (सं.)। भारत के लोग उत्तर प्रदेश। एक्सएलआईआई भाग तीन। मनोहर प्रकाशन। पीपी 1006-10121

3. सच्चिदानंद (1 जनवरी 1988)। परंपरा और विकास। अवधारणा प्रकाशन कंपनी। पीपी। 124-। आईएसबीएन 978-81-7022-072 28 सितंबर 2012 को लिया गया।

4.विजय एस उपाध्याय; गया पांडे (1 जनवरी 1993)। मानवशास्त्रीय विचार का इतिहास। अवधारणा प्रकाशन कंपनी। पीपी. 436.

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: Praveen Rahul

Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: May 2022

5. ए बी 2 मार्च, शैलवी शारदा | टीएनएन | अपडेट किया गया; 2017; इस्ट, 12:391 "यूपी चुनाव 2017: 'ईश्वरीय अभिशाप' से त्रस्त, मुसहरों को नए राजनेताओं में कोई मोचन नहीं दिखता। उत्तर प्रदेश चुनाव समाचार - टाइम्स ऑफ इंडिया" । टाइम्स ऑफ इंडिया। 28 अगस्त 2019 को लिया गया।

6. मुकुल (1999) । "द अनटचेबल प्रेजेंट: एवरीडे लाइफ ऑफ मुसहर इन नॉर्थ बिहार"। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक |

7. चौबे, ज्ञानेश्वर (8 फरवरी 2008)। "स्वदेशी जनसंख्या द्वारा भाषा परिवर्तन: दक्षिण एशिया में एक मॉडल आनुवंशिक अध्ययन । मानव आनुवंशिकी के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल |

8. गिरी, मधु, राजनीतिक आर्थिक इतिहास हाशिए पर और पूर्व-मध्य तराई नेपाल के मुसहरों के बीच परिवर्तन।

9. ए बी सी डी नेपाल मानवाधिकार वर्ष पुस्तक 2018: अंग्रेजी संस्करण: इस रिपोर्ट में जनवरी से दिसंबर 2017 की अवधि शामिल है। पौडेल, मदन, मिश्रा, राजेश (संपादक), अनौपचारिक क्षेत्र सेवा केंद्र (काठमांडू, नेपाल) (पहला संस्करण) । काठमांडू, नेपाल।

10. "चुनाव 2019: चुनाव आते हैं और जाते हैं, बिहार के मुशहरों के लिए कोई प्रगति नहीं" । न्यूज़क्लिक । 9 अप्रैल 2019 | 13 जून 2019 को लिया गया।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: Praveen Rahul

Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: May 2022